Bodhi International Journal of
Research in Humanities, Arts and Science

Vol. 10 Special Issue 6 March 2026
E-ISSN: 2456-5571

Anya Se Ananya: The Journey of a Woman's Identity

Vishnupriya O

Research Scholar, Department of Hindi
Cochin University of Science and Technology, Kochi

Crossref doi
Open Access

Manuscript ID:
BIJ-SPL6-MAR26-MD-422

Subject: Hindi

Received : 30.08.2025
Accepted : 14.10.2025
Published : 25.03.2026

DOI: 10.64938/bijsi.v10si6.26.Mar422

Copy Right:

This work is licensed under
a Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License.

Abstract

Not everyone has the courage to write an autobiography, because presenting the vivid reality of one's entire life requires great patience and strength, which not all possess. Among the various literary genres that have developed in the modern era, autobiography holds a significant place. The entry of women into the field of autobiographical writing and the presentation of their lives is an important development. Women who were oppressed by a patriarchal society are now courageously presenting their lives with confidence and determination. Therefore, these autobiographies depict the real struggles, exploitation, and sufferings faced by women in society. One such autobiography is "Anya Se Ananya" by Prabha Khetan. The problems portrayed in it are not limited to Prabha Khetan alone; rather, they represent the story of all women striving to create their own identity in society. In this work, Prabha Khetan has presented, in a very serious manner, the problems of a girl born into a Marwari family. She highlights economic independence as a means for women's identity and liberation within society and family. The objective of this research paper is to analyse Prabha Khetan's autobiography "Anya Se Ananya" and explore the various dimensions of women's lives depicted in it.

Keywords: **Autobiography, Patriarchy, Identity, Economic Independence, Feminist Discourse**

बीज शब्द – स्त्री आत्मकथा लेखन और हिन्दी साहित्य, स्त्री संघर्ष, परिवार और समाज में स्त्री, स्त्री समस्या, आर्थिक स्वतंत्रता और स्त्री मुक्ति

जब एक व्यक्ति आत्मकथा लिखने का प्रयास करता है या आत्मकथा लिखने का साहस दिखाता है तो वह प्रशंसनीय कार्य बन जाता है। क्योंकि आत्मकथा व्यक्ति की आत्म पहचान होती है और उसकी पूरी जिंदगी का यथार्थ इसमें समाहित होने के कारण यह उसके जीवन की वास्तविक रचनात्मक अभिव्यक्ति होती है।

हिंदी साहित्य में आत्मकथा लेखन का विकास आधुनिक युग में ही हुआ है। हिन्दी की आत्मकथाओं में स्त्री रचनाकारों का प्रस्थान बहुत धीरे ही हुआ था, किन्तु जितनी भी स्त्री आत्मकथाएं इस समय लिखी गईं, सारी आत्मकथाओं में स्त्री जीवन के संघर्ष, समाज और परिवार से अपने अधिकारों के लिए लड़ने वाली स्त्री तथा समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज करने के लिए झेली हुई उसकी यातनाएं आदि की जीवंत प्रस्तुति हुई है । प्रभा खेतान की 'अन्या से अनन्या' हिन्दी के महिला साहित्यकारों की आत्मकथाओं में एक अनन्य उपलब्धि है। यह एक ऐसी स्त्री की आत्मकथा है, जो अपनी जिंदगी में कठिनाइयों को पार कर, दुख-दर्द और पीड़ा को भोग कर अपने अस्तित्व की तलाश करती हैं ।

प्रभा जी का जन्म एक मारवाड़ी परिवार में हुआ था । उस समय मारवाड़ी परिवार में जन्मी लड़की को किन-किन समस्याओं से गुजरना था, इसका चित्रण इस आत्मकथा में है। उनकी दाई माँ ने उनका पालन-पोषण किया था। प्रभा जी जब बंगाल आकर बसना शुरू करती हैं तब उन्हें कई भेदभावों का सामना करना पड़ता है। नई जगह में लोग उन्हें अप्रवासी समझने लगते हैं। एक मात्र मारवाड़ी होने के कारण कॉलेज के छात्रों के बीच भी उन्हें ऐसा एक भेदभाव का सामना करना पड़ता है।

इस आत्मकथा के अंतर्गत पितृसत्तात्मक व्यवस्था के मुखौटे को समाज के सामने खोल कर रखने का प्रयास भी हुआ है। प्रभा जी के अनुसार परिवार और समाज सभी जगहों में पितृसत्ता का प्रभाव व्याप्त है। सर्राफ नामक एक डॉक्टर, जो विवाहित और पांच बच्चों के पिता हैं, उससे प्रेम हो जाना और इसी प्रेम में अपनी ज़िंदगी कुर्बान कर देना आदि इस आत्मकथा का मूल बिन्दु है। इस आत्मकथा में

Vol. 10 Special Issue 6 March 2026
E-ISSN: 2456-5571

डॉक्टर सर्राफ का संबंध दो स्त्रियों से हैं- एक स्वयं लेखिका है और दूसरी तरफ उसकी पत्नी मिसिज सर्राफ है। लेखिका पढ़ी-लिखी हैं और आर्थिक स्वतंत्रता रखने वाली औरत भी है, लेकिन मिसिज सर्राफ अशिक्षित और बिना कोई कामकाज के घर संभालने वाली औरत है। लेकिन डॉक्टर सर्राफ इन दोनों स्त्रियों से एक ही समय प्रेम संबंध स्थापित करके उनकी ज़िंदगी बर्बाद करता है । आत्मनिर्भर होकर भी लेखिका डॉक्टर की बुरी हरकतों का विरोध करने में असमर्थ हो जाती हैं । डॉक्टर साहब के प्रति उनके मन में प्रेम है,जिसके कारण वे सबकुछ चुपचाप सहती हैं । मिसिज सर्राफ के लिए उसके पति और बच्चे ही उसकी दुनिया है, इसलिए अपने पति का दूसरी स्त्री से संबंध होने के पश्चात भी वह अपने पति से बिछुड़ने के भय से इसका विरोध नहीं करती है ।लेखिका कमला सिंघवी का कथन है "हमारे समाज में पुरुष को न केवल बहुविवाह ,बल्कि बिना विवाह के भी अपने हरम और रनिवास में स्त्रियों को एकत्र करने की छूट थी।वास्तव में सामाजिक अवचेतना में कहीं इस बात का भी आभास मिलता है कि कई स्त्रियों के आकर्षण का केंद्र होना और अपने रनिवास को अगणित सुंदरियों से अलंकृत करना पौरुष और तेजस्विता का मापदंड माना जाता था।पुरुष चाहे विवाह के साथ अन्यत्र प्रेम संबंध रखे,उसका चरित्र लांछित नहीं होता,जबकि उन्हीं परिस्थितियों में एक पापिन कहा गया है स्त्री को।"1

यहाँ लेखिका की ज़िंदगी के साथ-साथ डॉ. सर्राफ का वैवाहिक जीवन भी बर्बाद हो जाता है। किन्तु मिसिज सर्राफ प्रभा जी और डॉक्टर के संबद्ध को स्वीकार करती है, लेकिन प्रभा अपने मन ही मन इस भ्रम में पड़ी हुई हैं कि उन दोनों के बीच का संबंध क्या है? यह किस तरह का सम्बन्ध है? क्योंकि उन्हें कभी भी एक पत्नी का स्थान नहीं मिला था। जिंदगी भर बिना शादी के उन्हें डॉक्टर के लिए जीना पड़ता है। ऐसी एक स्थिति में उनकी अस्मिता और आत्मपहचान संकटपूर्ण हो जाती है।

कॉलेज शिक्षा पूरा करने के बाद वे विदेश जाने का निर्णय लेती हैं। वहाँ कुछ कोर्स पूरा करके वापस लौटती हैं और कलकत्ता में एक व्यापार शुरू करती हैं। इस प्रकार वे एक स्वतंत्र महिला बन जाती हैं। अब उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी है और वे अकेले जीने के लिए आज़ाद भी हैं। लेकिन डॉक्टर के प्रति उनका प्यार बना रहता है और उनकी आर्थिक स्थिति में डॉक्टर का नियंत्रण भी शुरू होता है। डॉक्टर उन्हें शंका की दृष्टि से देखता है और अन्य पुरुषों के साथ संबंध का आरोप भी लगाता है। जिसके कारण उन्हें कभी अपमान भी झेलना पड़ता है। लेखिका का कथन है कि "सब कुछ आधा अधूरा रह जाता,मगर क्यों ? क्या मैं यह विश्वास करूं कि प्रेम का विकल्प तर्क वितर्क नहीं, कि प्रेम और घृणा, स्वतंत्रता और गुलामी, झूठ और सच,जीवन और मृत्यु…कुछ ऐसी स्थायी द्वित्व है, जिनके बीच कहीं कोई स्पेस नहीं,कोई तीसरा विकल्प है ही नहीं। इसी द्वित्व में से किसी एक का चुनाव करना होगा और इसे ही हम व्यक्तिगत जिजीविषा कहें तो? निरपेक्ष कुछ नहीं,सब कुछ सापेक्ष,पर यह द्वित्व …अपने-आप में क्या यह द्वित्व भी निरपेक्ष नहीं हो जाता?"2

एक मारवाड़ी स्त्री, विशेषकर एक अविवाहित स्त्री का समाज के बाहर निकलना और व्यापार शुरू करना आदि उस समय एक आसान बात नहीं थी। समाज में स्त्री के सामने कई बाधाएँ होती हैं, कई कारणों से उसे रोका भी जाता है। काम करना, व्यापार करना, विदेश जाना, व्यापार की आवश्यकता के लिए होटल में रहना और अकेले यात्रा करना आदि सब उसके सामने उपस्थित बाधाएँ हैं । ये सब एक पितृसत्तात्मक समाज के लिए स्वीकार्य भी नहीं हैं। इन सबका विरोध करती हुई लेखिका समाज में अपनी पहचान बनाने की कोशिश करती हैं और वे आर्थिक स्वतंत्रता हासिल करती हैं । वे सामाजिक समस्याओं को तोड़ती हुई अपने जीवन में सफलता की सीढ़ियाँ पार करती हैं । आर्थिक स्वतंत्रता के बारे में रजनी गुप्त का एक कथन है कि "आधिपत्य, दमन और अवमानना के इस समूचे पितृसत्तात्मक मूल्य-व्यवहार से टकराती स्त्री को अब आर्थिक आत्मनिर्भरता अपने बचाव का सबसे कारगर अस्त्र नजर आता।परिवार में श्रम के अमानवीय बंटवारे से क्षुब्ध वह सोचती कि आर्थिक आत्मनिर्भरता ही उसके आत्मसम्मान और व्यक्तित्व की आत्मपर्याप्तता का समूचा स्पेस मुहैया कराएगी।"3

आत्मकथा के अंत में कैंसर के कारण डॉक्टर सर्राफ की मृत्यु हो जाती है। बीमारी के समय लेखिका उसके साथ देती हैं, रसोई का काम संभालती हैं और बच्चों का पालन-पोषण भी करती हैं किन्तु डॉक्टर के परिवार में उनको कोई स्थान नहीं मिला। डॉक्टर की मृत्यु के बाद की स्मरण सभा में भी उनका जिक्र नहीं हुआ । जिंदगी भर उस पुरुष के लिए जीने के बावजूद भी, उसके जीवन में प्रभा खेतान को कोई स्थान नहीं मिला। वे डॉक्टर की प्रेमिका थीं। लेकिन समाज में उन्हें केवल बुरी औरत की संज्ञा मिली । अपनी पूरी जिंदगी समर्पित करने के बावजूद भी प्रभा जी को अपमान, दुख और संघर्ष ही झेलना पड़ा । इस प्रकार डॉक्टर और प्रभा जी के बीच का संबंध निरर्थक हो गया ।

इस आत्मकथा में केवल लेखिका ही नहीं बल्कि अन्य कई स्त्रियां भी आती हैं, जैसे मिसिज सर्राफ, आइलिन , लेखिका की माँ, दाई माँ, मिसिज डी आदि । इन पात्रों के द्वारा स्त्री जीवन की समस्याओं के विभिन्न पहलुओं का चित्रण हुआ है। इनमें स्त्रियों के अकेलापन की समस्या, तलाकशुदा औरतों के संबंध में समाज की दृष्टि और अविवाहित स्त्रियों की समस्याएं आदि भी शामिल हैं। यह सच है कि इस आत्मकथा में हर एक स्त्री द्वारा झेली गई समस्याएं अब भी जारी है।

समाज में शादी के बिना स्वतंत्र जीवन बिताने वाली नारी को उपेक्षा की दृष्टि से देखने की परंपरा प्रचलित है। वह जितनी भी ज्ञानी हो, किन्तु अविवाहित रहने के कारण उसके विचार और मान्यताओं को समाज में कोई स्थान प्राप्त नहीं होता है। शादी और घर-गृहस्थी स्त्री के लिए अनिवार्य बताकर उसे समाज के हाशिए पर रखने का प्रयास पुरुषसत्ता के द्वारा होता है। अगर विवाहित पुरुष से कोई स्त्री प्रेम करता है तो समाज उसे बुरा मानता है और इसमें केवल स्त्री को ही गाली देती है।

इस आत्मकथा में स्त्री शरीर के संबंध में समाज का जो दृष्टिकोण है उस पर विचार करती हुई लेखिका लिखती हैं -" मीडिया स्त्री देह की एक खूबसूरत मगर असंभव सी तस्वीर को औरत के सामने आदर्श रूप में प्रस्तुत करता है, तथा स्त्री इस छवि को एक परम आदर्श एवं सुखकारी रूप में स्वीकार लेती है।"4 स्त्री अपना शरीर सामाजिक इच्छाओं के अनुसार बदलती रहती है, या यों कहे तो उसे समाज की संकल्पनाओं के अनुसार जीना पड़ता है। वह कभी भी अपने शरीर की यथार्थ संरचना से संतुष्ट नहीं है। अपने शरीर का रंग,रूप, चेहरा, बाल सबको लेकर वे असंतृप्त हैं। इसी कारण से स्त्रियां अपने सारे रूप-रंग को बदलने के लिए हेल्थ क्लब, पार्लर आदि जगहों में जाती रहती हैं।

लेखिका की विदेश यात्रा में उनकी मुलाक़ात विदेश की अन्य स्त्रियों से भी हो जाती है । ये सारी स्त्रियाँ अपने जीवन में किसी न किसी तरह का दुख या समस्याओं का सामने करने वाली थीं । इससे स्पष्ट है कि केवल भारत में ही नहीं बल्कि विदेश में भी स्त्रियों की स्थिति बेहत्तर नहीं है। उनके जीवन में कई समस्याएँ आती रहती हैं । यह सच है कि संभवतः इन समस्याओं के पीछे या उनके दुख या पीडा के पीछे एक पुरुष का हाथ ज़रूर होता है। स्त्री मानवाधिकारों से वंचित है और असुरक्षित ज़िंदगी जीने के लिए अभिशप्त भी है । इस आत्मकथा के एक स्त्री पात्र कैथी का कथन इस प्रकार है- ‘‘प्रभा,औरत अभी मनुष्य श्रेणी में नहीं गिनी जाती और तुम अमीर-गरीब का सवाल उठा रही हो? तुम मुझे राष्ट्र का भेद समझा रही हो? माई स्वीट हार्ट ! हम सब औरतें अर्ध-मानव हैं। पहले व्यक्ति तो बनो,उसके बाद बात करना।‘‘5 इस कथन से स्पष्ट है कि औरतों की गिनती मनुष्य की श्रेणी में नहीं होती है, इसलिए स्त्रियों का शोषण सभी समय होता रहता है । स्त्री को पूर्ण रूप से एक मानव के रूप में समझने वाले समाज की प्रतीक्षा अब भी बाकी है।

स्त्री से जुड़ी हुई पुरुष की नज़र भोग पर केन्द्रित है, उसके अनुसार स्त्री केवल उसकी इच्छाओं की पूर्ति का साधन है। किन्तु सबकुछ सहकर भी स्त्री को अंत में सहारा देने वाला कोई नहीं होता है। प्रभा जी लिखती हैं –‘‘……….मुझे अपने स्त्रीपने से चिढ़ हो रही थी, आखिर हम स्त्रियाँ अपने प्रिय पुरुष की अहम संतुष्टि के लिए खुद का अवमूल्यन क्यों करती हैं, किसलिए गुलाम की तरह उस पुरुष की हर मूर्खता एवं कुंठा को झेलती रहती हैं। मैं ही आखिर क्यों और किसलिए यह सब बर्दाशत करूं? क्या में मेहनत नहीं करती?क्या मैं पैसा नहीं कमाती?दूसरा मन तुरन्त पलटकर मुझसे कहता, चुप ! बिलकुल चुप !! इन बातों को जबान पर नहीं लाना। नहीं तो मार दी जाओगी। लाखों-करोड़ों का मामला है, सँभलकर चलना सीखो।‘‘(6) स्त्री के मन में प्रतिरोध होते हुए भी कई बार उसे चुप्पी साधना पड़ता है, क्योंकि एक अच्छी ज़िंदगी का सपना उसे समझौते के लिए विवश करा देता है ।

इस आत्मकथा के माध्यम से प्रभा खेतान ने स्त्री जीवन की उन समस्याओं को हमारे सामने रखने का प्रयास किया है, जिनके कारण स्त्री की अस्मिता के आगे एक प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है । जिंदगी भर अपने जीवन में स्त्री समाज और परिवार में अपना स्थान, अपनी आज़ादी एवं मुक्ति के लिए निरंतर संघर्ष करती रहती है। पुरुषों की सहायता के बिना स्वतंत्र जीवन यापन करनेवाली महिलाओं को समाज में कम स्वीकृति प्राप्त होती है किन्तु आज स्थिति धीरे-धीरे बदल रही है । जब स्त्री ने समाज की मान्यताओं और रूढ़ियों से बाहर चलकर उनकी अस्मिता की खोज करने का आरंभ किया और अपनी जिंदगी अकेले जीने का निर्णय लिया, तब उसके चरित्र पर अनेक कलंक लगाए गए। स्त्री शोषण के प्रति विद्रोह करने वाली स्त्रियों के प्रति समाज का व्यवहार उदासीन हो गया । कई बार उसकी असहमति हो भी दबाई गई । प्रभा जी के अनुसार आर्थिक स्वतंत्रता ही स्त्री मुक्ति का एक मात्र उपाय है । यह आत्मकथा सामाजिक यथार्थ की वास्तविक दस्तावेज प्रस्तुत करती है। प्रतिकूल स्थितियों में भी मुक्ति के लिए प्रभा जी ने जो संघर्ष किया, यह सचमुच सराहनीय है । अंततः स्त्री जीवन के एक-एक पहलुओं को चित्रित करने में यह आत्मकथा पूर्ण रूप से सफल हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. कमला सिंघवी – आधुनिक परिवार में स्त्री, पृ.सं 32,कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली,2017
2. प्रभा खेतान - अन्या से अनन्या,पृ.सं-15,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,2007.
3. शैलेन्द्र सागर, रजनी गुप्त(सं)-आजाद औरत कितनी आजाद,पृ.सं-8, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली,2017
4. प्रभा खेतान – अन्या से अनन्या,पृ.सं-170,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,2007.
5. वही – पृ.सं-157
6. वही – पृ.सं-213